हिरोल

(ऐतिहासिक नाटक)

८१३.८
शिव/हि

शिवप्रसाद "चारण"

❀ श्री गणेशाय नमः ❀

हिरोल

डा० [illegible] पुस्तक-संग्रह

(ऐतिहासिक नाटक)

(लेखक—श्री शिवप्रसाद)

पात्र-परिचय

भैरवनाथ—भगवान शिवका एक रूप

बप्पा रावल, महाराणा प्रताप, महाराणा कुंभ, महाराणी पद्मिनी } अमरसिंहके पूर्वज

महाराणा अमरसिंह—मेवाड़-नरेश

चन्दावत सरदार, बान्दाठाकुर } चन्दावत सामन्त

भानुजी, बल्ल, अचल, दल्ल } शक्तावत सामन्त

पूर्णसिंह—भानुजीका पुत्र

सागरसिंह—अमरसिंहका चाचा

कर्ण, हरिदास राठौर, साद्रीपति झाला, बाकरौलका राव } मेवाड़के अन्य सामन्त

कर्णराय—मेवाड़का चारण

वीरराय—शक्तावतोंका चारण

कविराय—चन्दावतोंका चारण

विष्णुदास—मेवाड़का राजपुरोहित

जहांगीर—दिल्लीका मुग़ल बादशाह

महावत खां, काफीखां, रफीखां—मुग़ल सेनापति

दुर्गा—अचलकी पत्नी

दूत, सैनिक, यवन सैनिक, आदि

अङ्क १

दृश्य १

स्थान—भिंसरोर दुर्ग

वीरराय—

शक्तिसिंह, जिसके विक्रमसे थर थर कंपित यवन हुए।
आज हिन्दको, हिन्दु जातिको कर अनाथ सुरभवन गए॥
आज गगनमंडलसे भीषण धूम्रकेतुका पतन हुआ!
आज मेरु-उत्तंग शृङ्गका भूचलसे भूशयन हुआ!
आज धरा वीरत्वहीन, पतिहीन शूरता आज हुई।
आज मिटी मेवाड़भूमि है देशधर्मकी लाज गई॥

भानुसिंह—सत्य है, वीरराय! शत्रुपक्षमें प्रलय मचादेने वाले वीर शक्तिसिंह जैसे वीरपुरुष इस अभागे हिन्दुस्थानमें फिर न जाने कब जन्म लेंगे? जब मैं अपने पूज्य पिताके महान कृत्योंका स्मरण करताहूँ तो शरीर रोमांचित होजाताहै और नेत्रोंसे अश्रुधारा बहनेलगतीहै।

वीरराय—महापराक्रमी वीर शक्तिसिंहकेलिए पश्चात्ताप करनेकी आवश्यकता नहींहै, भानुसिंह! उन्होंने अपने जीवनके पूर्वार्द्धमें परम तपस्वी महाराणा प्रतापका विरोधकरके विधर्मी विदेशी यवनोंसे जो गठबन्धन कियाथा, उसका प्रायश्चित्त उन्होंने अपने जीवनके उत्तरार्द्धमें महाराणाकी प्राणरक्षा करके करदिया। महाराणा प्रताप और शक्तिसिंह हिन्दुराष्ट्रके सूर्य-चन्द्र थे। आज दोनोंके अस्त होजानेसे हिन्दु जातिके भाग्य-निशाकी अमावस्या आगईहै। ऐसे पुण्यश्लोक प्रातःस्मरणीय महापुरुष अशोच्य होते हैं। वे भगवानकी दिव्य विभूतियोंको लेकर संसारमें अवतरित होतेहैं और दुर्बल मानवोंको कर्तव्यपथ का प्रदर्शन करतेहैं।

भानुसिंह—आपका कथन यथार्थ है, वीरराय ! किन्तु यदि मैं अपने वीर पिताकेलिए शोक न भी करूं तो भी उनका ज्येष्ठ पुत्र होनेके कारण मेरे ऊपर अपने सोलह भ्राताओं और अपने विशाल परिवारके पालनका इतना कठिन भार है कि उसे मेरे दुर्बल स्कन्ध उठानेमें सर्वथा असमर्थ हैं। सौ जन्मका झूठा, सहस्र जन्मका गोघाती और लक्ष जन्मका महापातकी ज्येष्ठ जन्म प्राप्त करताहै।

वीरराय—कैसे ?

भानुसिंह—माता-पिता का तिरस्कार, कनिष्ठ भ्राताओंकी गर्वोक्तियां और संबंधीजनोंके वाक्प्रहार सबके सन्मुख उसे बलि पशु की भांति सिर झुकाकर खड़ा रहना होता है। उसे सबकी झिड़कियां कानोंमें तेल डालकर सुननी होती हैं, सबके ऊधम-उत्पात आंखोंपर पट्टी बांध कर देखने होते हैं और सबकी वाक्जूतियोंकी तड़ातड़ अपनी खोपड़ीसे पगड़ी उतारकर सहनी होतीहैं।

वीरराय—और ऐसा क्यों नहीं कहते कि ज्येष्ठ जन्म मिलनेसे राजसिंहासन भी उसे ही मिलताहै। कनिष्ठ भ्राताओंको, उन्हीं माता-पिताकी सन्तान होनेपर भी ज्येष्ठके सन्मुख साधारण प्रजाकी भांति मूक दासवत् करबद्ध खड़ा रहना होता है।

भानुसिंह—यह तो वे कहेंगे जिन्हें राजसिंहासन मिलताहै। भानुसिंहको तो यह साधारण छोटा सा भिंसरोर दुर्गही पैतृक सम्पत्तिके रूपमें मिला है। तुम्हीं बताओ इसीके आधारपर मैं अपने सोलह भाइयों और अपने विशाल परिवारका पालन किस प्रकार करसकताहूँ। नहीं, मैं अपने भ्राताओंको इस दुर्गमें आश्रय न दे सकूंगा। मुझे अपने और अपने बच्चोंके पोषणकेलिए इस दुर्गका समस्त अधिकार अपने अधीन रखना

होगा। अचल और अन्य भाई कहीं अन्यत्र देखें। पूर्णसिंह! जाओ, दुर्गका द्वार बन्द करदो जिससे तुम्हारे काका अचल, बल्ल आदि इस दुर्गमें प्रवेश न करसकें।

पूर्णसिंह—बहुत अच्छा। *(प्रस्थान)*

वीरराय—आपका यह अन्याय और दुराग्रह है, भानुसिंह! शक्तिसिंह के औरस पुत्र होने के कारण क्या अचल, बल्ल आदि आपके शेष भ्राताओंको यह अधिकार नहीं कि वे भी अपने पिताके इस दुर्गका भोगकरें? कुछ काल पूर्व, आपके वे भ्राता आपके पूज्य पिताके शवको श्मशान लेगए हैं, और इतने ही अल्पकालमें, पिताकी चिता शान्त होनेके पूर्व ही आप अपने सगे भ्राताओंसे इतना छल करनेलगेहैं! आपको ऐसा करते लज्जा नहीं आती?

भानुसिंह— लज्जा उन्हें आनी चाहिए, वीरराय! जो अपनी सन्तानके भरणपोषणका विचार भुलाकर अबाधगतिसे सन्तान पर सन्तान उत्पन्न करते जातेहैं। वनमें एक ही सिंह रह सकताहै और सिंह-सिंहनियां एक ही पुत्रको जन्म देनेके पश्चात् वैराग्य ले लेतीहैं। अपने सत्रह पुत्रोंकी आजीविकाका प्रबन्ध पिताजीको करना चाहिए था। मैं उनका जेष्ठ पुत्र हूँ। मैने मुगलोंके दरबारमें बड़े सुखविलासके दिन बिताएहैं। मेरा निर्वाह ज्वार-बाजरेसे नहीं होसकता। मैं इस दुर्गको न छोड़ूँगा। अचलादि कहीं अन्यत्र अपनी आजीविकाका प्रबंध करें।

वीरराय—मैं तुम्हारे इस अन्याय कृत्यको नहीं सहसकता, भानुसिंह! अस्तु जाताहूँ। अपने पिताके नेत्र मूंदते ही कनिष्ठ भ्राताओंके अधिकारोंको ठुकराकर पिताकी समस्त सम्पत्तिको आत्मसात् करनेवाले, नीच! इस भिंसरोर दुर्गको वक्षस्थलसे बांधकर तुम इस जगतसे नहीं लेजासकोगे किन्तु सदाकेलिए

अपने नामपर कालिमा पोतकर छोड़जाओगे। हिन्दुस्थानकी भावी सन्तान तुम्हारे नामपर थूकेगी और जब जब छलियों और जेतृभेदियों का नाम लिया जाएगा तब तब तुम्हारा स्मरण करके संसार नाक सिकोड़ेगा। सत्य कथन करनेमें वीरराय न तुम्हारे इन लाल लाल नेत्रोंसे भयभीत होताहै और न तुम्हारे इस कराल खड्गसे। (*प्रस्थान*)

भानुसिंह—साधारण चारणकी इतनी उद्दंडता! मेरे टुकड़ों पर पलनेवाला मुझे ही झिड़कियां देता और आंखें दिखाता है! दुर्गद्वार रुद्ध होने पर जब इसे कहीं भोजन न मिलेगा तब इसे सभ्यता, नम्रता और कृतज्ञताका पाठ प्राप्त होगा।

(*दुर्गके द्वारपर अचल, बल्ल और दल्ल आदि का प्रवेश*
पूर्णसिंह दुर्गका द्वार अन्दरसे बन्दकरताहै।)

अचल—(*दुर्गका द्वार खटखटाताहुआ*) खोलो, खोलो, पूर्णसिंह! द्वार खोलो। हमारे आतेही तुमने द्वार क्यों बन्द करलिया? खोलो।

(*दुर्गके प्रकोष्ठपर भानुसिंह और पूर्णसिंहका प्रवेश*)

भानुसिंह—मैं द्वार नहीं खोलसकता, अचल! जाओ, कहीं अन्यत्र अपना प्रबन्ध करो। मुझे अपना और अपने परिवारका पालन करना है। इस दुर्गसे तुम सबका निर्वाह नहीं होसकता। जाओ, चलेजाओ।

बल्ल—पिताके स्वर्गवास होतेही हमपर इतना अत्याचार! भानुसिंह! हम सब उसी पिताकी सन्तान हैं। तुम्हें इस दुर्ग पर अपना एकाधिपत्य जमानेका कोई अधिकार नहीं। खोलो, नहीं तो मैं एक झटकेसे दुर्गके कपाट उखाड़फेकूंगा और यदि मेरे ये प्रबल भुजदंड तुम्हें मतीरा सा पटकदें तो भ्रातृ रुधिर बहानेका दोष मेरे शिर न मढ़ना। खोलो।

अचल—चुपरहो, बल्ल ! अपने ज्येष्ठ भ्राताके प्रति तुम्हें ऐसे उद्दण्ड वचनोंका प्रयोग नहीं करनाचाहिए। लक्ष्मणने अपने बड़े भ्राताके कारण नंगे पैर वन-वन भटकना स्वीकारकिया था, और भरतने पितृप्रदत्त राज्य त्यागकर वैराग्य लियाथा। हमारे पूर्वज प्रचंड वीर चंडने विमातृपुत्रकेलिए अपना विशाल साम्राज्य त्यागदियाथा। क्या हम अपने ज्येष्ठ भ्राताकी इच्छा पूर्तिकेलिए भिंसरोर नहीं त्यागसकते ?

बल्ल—जिसे आप त्याग कहरहेहैं वह त्याग नहींहै, अचल! जिस ज्येष्ठ भ्राताने पितृ चिताके शान्त होनेके पूर्व ही कनिष्ठ भ्राताओंके अधिकारोंकी अवहेलना करके समस्त पैतृक सम्पत्ति को आत्मसात् करलिया उसकेलिए मेरे हृदयमें कोई सम्मान नहीं। वह अन्यायी है। ऐसे अन्यायियोंके अन्यायको जो शांति पूर्वक पीजातेहैं, वे कायर हैं और अन्यायकी वृद्धिमें योग देतेहैं।

दल्ल—जाने दो, बल्ल ! वसुन्धरामें जन्म लेते समय मानव अपने पूर्व संस्कारोके साथ अपनेलिए जीवन भरकी आजीविका भी साथ लाताहै। हम अपने भालपट्टपर विधातासे यह अङ्कित करवाकर नहीं लाएहैं कि केवल भिंसरोरमें ही हमें भोजन-वस्त्र मिलसकेंगे। भिंसरोरके बाहर भी करोड़ों मनुष्योंको भोजन-वस्त्र मिलरहेहैं। अपने बाहुबल और पराक्रमसे हम अनेकों नवीन भिंसरोरकी सृष्टि करसकतेहैं। इस भिंसरोरको लेकर भानुजी ही चाटतेरहें।

अचल—ठीक है। यह वसुन्धरा, वीरोंकेलिए, संघर्षकरने वाले कर्मयोगियोंकेलिए है। भानु जी ! द्वार खोलदो। हमें आपका भिंसरोर दुर्ग नहीं चाहिए मुझे अपनी स्त्री और अस्त्र शस्त्रोंको दुर्गसे बाहर निकालनेदो। हम ईडर चलेजाएंगे, वहीं मृगया और साहसिक कृत्योंसे अपना निर्वाह करलेंगे।

भानुसिंह—अस्त्र-शस्त्र तुम्हें कुछ न मिलसकेंगे। वह सब अब मेरे हैं। केवल अपनी स्त्रीको लेजासकतेहो। उसके जानेसे एकके भोजनकी बचत ही होगी। पृष्ठद्वारके निकटकी खिड़कीके पास जाओ उसे उस मार्गसे बाहर निकाल दियाजायेगा।

अचल—बहुत अच्छा!

बल्ल—धन्य बड़े भ्राता! तुम और तुम्हारा भिंसरोर युग-युग तक अमर रहें। हम उस वीर शक्तिसिंहके पुत्र हैं जिन्होंने खड्गकी धार रुईपर न देखकर अपनी अंगुली उड़ाकर देखी थी। हम सैंकड़ों नवीन भिंसरोरका निर्माण करलेंगे। चाट लो तुम अपने अस्त्र-शस्त्र। वीर शक्तिसिंहके वीर पुत्र अपनी मुष्टिकाओंसे पर्वतोंको चूर्ण करके और अपने पदाघातसे भूमिको कंपाकर नवीन अस्त्र-शस्त्रोंकी सृष्टि करलेंगे।

(सबका प्रस्थान)

दृश्य—२

स्थान—उदयपुर, अमरमहल, राज-सभा-गृह

कर्ण—ठीक है, महाराणा! मुगलोंकी अधीनता न स्वीकार करनेका अर्थ है वन-वन भटकना, दिन-रात प्राण-रक्षाकेलिये सशंकित रहना, और अपने और अपनी प्रजाके धनसंपति, सुख और जीवनको अपार संकटमें डालना।

अमरसिंह—हां, वीर कर्ण! यही तो मैंने अपने पूज्य पिताके जीवनमें देखाहै। राजकुमार होनेपरभी हमें झोपड़ियोंमें पत्तोंकी शय्यापर विश्राम करनापड़ा। ज्वार-बाजरे और घासकी रोटियोंके लिए तरसनापड़ा और एक दिन एक घड़ी भी शांतिकी निद्रा न प्राप्तकरसके। मेवाड़भूमि आज वीर पुरुषोंसे हीन होचुकीहै।

एक-एक करके हमारे समस्त वीर पिताजीके जीवनकालमें ही वीर गति प्राप्तकरचुकेथे । रिक्त कोष, रिक्त अस्त्रागार, तथा अल्प और अशिक्षित सैन्यको लेकर मुगलोंकी विशाल वाहिनीका विरोध नहीं कियाजासकता ।

हरिदास झाला—वर्षा-बुन्दोंको ही छातेपर रोकाजासकताहै, महाराणा ! सिन्धुकी उत्ताल तरंगोंका निराकरण क्षुद्र मानव-बाहुओंसे नहीं होसकता । समसंख्यासे युद्ध करनेमें ही वीरत्व है । दो-चार सहस्र सेना लेकर मुगलोंकी अपार वाहिनीसे युद्ध छेड़ना मूर्खता है, अग्निकुंडमें कूदना है, अपने बचेखुचे सैनिकों का भी विनाश करनाहै ।

अमरसिंह—यही तो मैं सोचताहूँ, झालावीर ! परवेज और आसफखां जफरवेगके अधीन बीस सहस्र अश्वारोही मुगल-सैनिक मेवाड़भूमिको रौंदतेहुए आरहेहैं । सीमान्तके ग्रामोंपर अग्नि धधकाईजारहीहै । अत्याचार और हत्याकांड मचाया जारहाहै । मुझसे यह सब न देखाजाएगा । मैं अधीनता स्वीकार करलूंगा । मातृभूमि मेवाड़में रुधिर-धारा न बहनेदूंगा । झाला-वीर ! जाओ मुगल राजकुमारसे संधिका प्रस्ताव करो ।

(बान्दाठाकुरका प्रवेश)

बांदाठाकुर—देशके स्वातंत्र्य और धर्म-संस्कृतिके द्रोही मुगलों से संधिका प्रस्ताव ? मृत्यु शय्यापर लेटेहुए अपने तपस्वी पिता के सम्मुख कीहुई अपनी प्रतिज्ञाको आपने इतना शीघ्र भुलादिया महाराणा ? उठो, कायरता त्यागो, देश और धर्मकी रक्षाकेलिए शस्त्र उठाओ ।

अमरसिंह—नहीं बान्दाठाकुर ! युद्ध नहीं होगा । आज समस्त उत्तरभारतमें मुगलोंका आधिपत्य है । मैं मुगलोंका विरोध

करके मेवाड़भूमिको समराग्निमें भस्म नहीं करूंगा। मैं मुगलोंका आधिपत्य स्वीकारकरके शान्ति स्थापितकरूंगा।

(चन्दावतसरदारका प्रवेश)

चन्दावत सरदार—मातृभूमिको विदेशी विधर्मी यवनोंका दास बनानेका अधिकार आपको नहीं है, महाराणा! उधर देखो, आकाशमें बप्पा रावल,संग्रामसिंह और प्रतापकी हुतात्माएं आपकी इस कायरतापर अश्रु बरसारहीहैं। हुतात्मा गोरा-बादल, बप्पा रावल और जयमल-पत्ताके संकेतपर लक्ष-लक्ष हिन्दुओंने क्या इसीलिए अपना रुधिर बहायाथा कि आज महात्मा प्रताप का कायर पुत्र उनके उज्ज्वल कुलका गौरव भुलाकर मातृभूमिको दासताके बंधनमें फंसादे? वीरांगना पद्मिनी, जवाहरबाई और कर्मदेवीके आदेशपर लक्ष-लक्ष नारियोंने क्या इसीलिए अपनेको जीवित चितामें भस्म कियाथा कि आज शिशोदिया-कुलकलंक मुगलोंके सन्मुख सिजदा करेगा? उठो कायरता त्यागो। हमारा सैन्य रणप्रांगणकेलिए प्रस्थान करचुकाहै। चलो चलकर, उसका संचालन करो और उत्साह बढ़ाओ।

अमरसिंह—मुंह बन्द करो, देशद्रोही, राजद्रोही चन्दावत!

चन्दावत सरदार—चन्दावत और देशद्रोही? चन्दावत और राजद्रोही? उस वीर चंडके वंशज, जिसने आपके पूर्वज अपने विमातृपुत्र छोटे भ्राताकेलिए दूसरे भगवान रामके समान राजसिंहासन त्यागदिया और अपना रुधिर बहाकर उसे राठौरों के ग्राससे बचाया, आज देशद्रोही और राजद्रोही बनगए? जिस मातृभूमिके एक-एक रजकणकेलिए चन्दावतोंने अपना रुधिर बहायाहै, उसे, जबतक एक भी चन्दावत रहेगा, दासता शृङ्खलाओंमें नहीं जकड़ा जाएगा। जिस शिशोदिया कुलके गौरवकी रक्षाकेलिए चन्दावतोंके बच्चे-बच्चेने अगणित बलिदान

किएहैं उसका मस्तक, जबतक एक भी चंदावत जीवित रहेगा, विदेशियोंके सन्मुख नहीं झुकेगा। जाओ, बांदाठाकुर! महाराणा केलिए अश्व प्रस्तुतकर द्वारपर लाओ।

(बांदाठाकुरका प्रस्थान)

अमरसिंह—बस, बस, उद्धत चंदावत! चुपकर, नहीं तो राजद्रोहीकी जिह्वा उखाड़कर फेंकदीजाएगी।

चन्दावत सरदार—किसे ज्ञात था कि अभागे प्रतापकी तपस्या और त्यागको उनका यह कायर पुत्र इस प्रकार मिट्टीमें मिलादेगा? इस अमरमहलमें विलासितामें मग्न महाराणा! आपको अपने उज्ज्वल कुलकी गौरवगाथापर कालिमा पोतते लज्जा नहीं आती। महातपस्वी प्रतापके तृणशय्यापर सोनेके प्रणको भुलाकर आप उस व्रतका भव्य मंचिकाओंके ऊपर मखमली गद्दोंके नीचे एक अंगुलभर तिनका रखकर अभिनय करनेलगेहैं। और पत्तलोंपर भोजन करनेके प्रणको निभानेकेलिए सुवर्णकी थालीके एक कोनेमें तुलसीका एक पत्ता रखकर अपने कर्तव्यकी इतिश्री समझनेलगेहैं। *(पीतलकी छड़ीसे योरोपीय विशाल दर्पणके खंड-खंड करके)* जब इस देशकी बनीहुई वस्तुओंसे आपकी विलास-लीला पूर्ण न हुई तो आप सात समुद्रपारसे यह दर्पण-जैसी विदेशी वस्तुएं मंगाकर देशका धन बाहर फेंकनेलगे।

(बांदाठाकुरका प्रवेश)

बांदाठाकुर—चंदावत सरदार! अश्व प्रस्तुत है।

चंदावत सरदार—*(अमरसिंहको सिंहासनसे उतारकर)* आपको महाराणा प्रतापके उज्ज्वल वंशपर कलंक लगानेका कोई अधिकार नहीं। आपको हम बलपूर्वक अश्वपर चढ़ाकर, रस्सीसे

बांध, रणप्रांगणमें लेचलेंगे। उठो, सामंतो! महाराणा प्रतापके पुत्रको कलंकसे बचाओ।

सामंतगण—(खड़े होकर) धन्य! धन्य! चलो, चलो।

अमरसिंह—शालुम्त्रापति! आपने मुझे कर्तव्यसाधनकी ओर प्रेरितकरके जो वीरोचित कृत्य कियाहै वह आप-जैसे वीर पुरुषके ही योग्य है। चलिए और समरांगणमें चलकर देखिए कि अमरसिंह महात्मा प्रतापका योग्य पुत्र है या नहीं।

सामंतगण—(उत्साहसे) भगवान एकलिंग की जय! मातृ भूमि मेवाड़की जय! महाराणा अमरसिंहकी जय!

(रानियोंका आरती-सामग्री लेकर अन्तर्द्वारसे प्रवेश)
(रानियां आरती करतीहैं—)

जाओ, जाओ समरभूमिमें खड्ग उठाकर, वीर!
जाओ, आना विजय प्राप्तकर, शत्रुवक्षको चीर ॥ जाओ०
मातृभूमिकेलिए मिटें, हों धर्महेतु बलदान।
धन्य! धन्य! जो रखें देशका मान चढ़ाकर प्राण ॥जाओ०
जाओ, जाओ वीरो! रक्खो मातृदुग्धकी लाज।
हुआ अमर मरकर भी जो नर मरा देशके काज ॥ जाओ०
विजय प्राप्तिपर वसुधा-सुख, मृत होनेपर सुरलोक।
देशधर्महित मरमिटने, तन तजनेमें क्या शोक? जाओ०

(रानियोंका अन्तर्द्वारसे और शेषका बहिर्द्वारसे प्रस्थान)

दृश्य – ३

स्थान—पालोड, वनमार्ग

दुर्गा—अब तो नहीं चलाजाता, प्राणनाथ ! चलते-चलते पैरोंपर छाले पड़गएहैं। प्रसववेदना तीव्रतर होतीजारहीहै। इस पेड़के नीचे लेटजातीहूँ।

अचल—इस पेड़के नीचे कैसे लेटोगी ? प्रबल आंधी चलरही है। आकाश भीषण काले-काले बादलोंसे घिरगयाहै। अब तो वे कड़कने भी लगे और बिजली चमकनेलगीहै। शीघ्र ही प्रबल वर्षा आनेवालीहै। दल्ल अभी तक नहीं आया।

दुर्गा—अब मुझसे खड़ा नहीं रहाजाता। पीड़ा अत्यन्त तीव्र है। लाओ, अपना दुपट्टा दो, मैं यहीं लेटजातीहूँ।

(दल्लका प्रवेश)

दल्ल—शोनगढ़ सरदारने तो आश्रयदेना अस्वीकार करदिया, अचल ! जब मैंने अपने वीर पिताका नाम लिया तो उसने अविश्वासकी हंसी हंसतेहुए कहा, 'ऐसी मिथ्या कहानियां गढ़कर किसी भोले सरदारको ठगना। शक्तिसिंहके पुत्र भिंसरौरमें आनन्द कररहेहोंगे। वे इस प्रकार द्वार-द्वार नहीं भटकसकते।'

अचल—विपत्तिके आते ही दूसरोंका विश्वास कूचकरजाता है, दल्ल ! इस समय कोई भी हमारी बातपर विश्वास न करेगा। अब तो प्रबलवेगसे वर्षा पड़नेलगीहै। अब क्या करें ? कहां आश्रय लें।

(बल्लका प्रवेश)

बल्ल— भ्राता ! सन्मुख ही एक जीर्ण देवालयका खंडहर है। मूर्ति संभवतः श्री गंगाजीकी है। पिछली ओरकी एक दीवार गिर गई है। पत्थर-मिट्टीका अन्दर ढ़ेर लगा है।

दुर्गा– कोई बात नहीं। चलो वहीं चलें। मैं प्रसव-पीड़ासे मरीजारहीहूँ। इस वर्षामें शिर ढ़कनेको स्थान मिलगया यही भगवानकी बहुत बड़ी कृपा है।

(सबका आगे बढ़कर मन्दिरके अन्दर प्रवेश)

(बल्ल आदि एक ओरके मिट्टी-पत्थरोंको दूरकरके दुपट्टा बिछा देतेहैं। दुर्गा उसपर लेटजातीहै, और पीड़ासे रोतीहै।)

अचल—एक दिन जिस वीर शक्तिसिंहके प्रबल पराक्रमसे दिल्लीश्वरके समस्त मनसबदार भी कांपतेथे, उसके नेत्र मूंदते ही उसके अभागे पुत्रोंपर ऐसे विपत्तिके बादल बरस पड़ेंगे यह किसने सोचाहोगा ? उस वीर शक्तिसिंहकी पुत्रबधूको इस प्रकार एक टूटे-फूटे मंदिरमें भूमिपर लेटकर प्रसवपीड़ासे तड़पनापड़ेगा, इसकी कल्पना भी किसने कीहोगी ?

बल्ल—यह विपत्ति आपने अपने शिरपर स्वयं ही बुलाईहै, भ्राता ! यदि आप लोलुप जेष्ठ भ्राताके अन्यायको शिर झुकाकर स्वीकार न करलेते तो आज यह विपत्ति न देखनीपड़ती।

अचल—बड़े घावको बड़ा पुरुष ही सहसकताहै, बल्ल ! हमारे पूर्वपुरुष महाराणा संग्रामसिंहने एक नेत्र खोदिया, एक बांह खोदी, एक पैर खोदिया, बक्षस्थलपर तीर, खड्ग, भालोंके अस्सी घाव सहे, और इस प्रकार जर्जरकाय होनेपरभी विदेशी विधर्मियोंके पाशसे देशकी रक्षा करनेकेलिए रणप्रांगणमें प्रस्थान कियाथा। महाराणा प्रतापने जो कष्ट सहे, क्या वह हमारे कष्टोंसे अधिक न थे ? जो विपत्ति-पथ हमने स्वीकार कियाहै, अब उसपर अग्रसर होनेमें ही कल्याण है, पीछे मुड़नेमें नहीं।

(दीवारसे पत्थर गिरतेहैं, गड़गड़ाहटकेसाथ दीवार गिरनेलगतीहै।)

दल्ल—यह देखो भ्राता ! दीवार गिरनेलगीहै । बस, अब भाभी पत्थरोंके नीचे दबतीहै ।

बल्ल—दल्ल ! भागो, भागो । कहींसे पेड़की मोटी टहनी तोड़ लाओ । तब तक मैं शिरके बलपर दीवार रोकेरहूँगा ।

(दल्लका प्रस्थान । बल्ल शिरके बल दीवार रोकताहै ।)

दुर्गा—हाय मां ! मैं पीड़ासे मरीजारहीहूँ । आज मैं बच न सकूंगी । न जाने किस कुघड़ीमें हमने भिंसरोर दुर्गसे बाहर पैर रखाथा । हाय मां !

अचल—विपत्तिपर विपत्ति ! भगवान ! मेरी कितनी परीक्षा लेरहेहो ? अच्छा प्रभु ! तेरी इच्छा । विपत्तिके भयंकर तूफानों और मृत्युके सन्मुख भी अचल अचल होकर खड़ारहेगा, कभी विचलित न होगा । बल्ल ! तुम्हें बड़ा कष्ट होरहाहोगा । मैं तुम्हारी सहायता करूं ?

बल्ल—नहीं भ्राता ! मुझे कोई विशेष कष्ट नहीं होरहा । बल्ल ऐसे साधारण कष्टोंसे घबरानेवाला नहीं ! आपको स्मरणहै, एक दिन दल्लका अश्व खाईमें गिरपड़ाथा और जब वह किसी प्रकार बाहर न निकलसका तो मैं वहांसे उसे गोदमें उठाकर लेआयाथा !

(पेड़की शाखा लेकर दल्लका प्रवेश)

दल्ल—भ्राता ! अब मैं पेड़की शाखा लेआयाहूँ । लो इससे दीवारपर टेक लगादूं ।

(शाखासे दीवारपर टेक लगाताहै । बल्ल अलग होताहै ।)

अचल—बल्ल ! आज इस निर्जनमें स्थित भग्न मंदिरमें गिरतीहुई दीवारको शिरके बल रोककर तुमने जो महान कार्य कियाहै, वह पौराणिक भीम या कृष्णके अद्भुत कार्योंसे कम नहीं । तुमने अद्भुत बलपौरुष दिखायाहै, और देव-दानवों-जैसा विचित्र कार्य कियाहै ।

दुर्गा—बच्चा होनेवालाहै। जाओ, अल्पकालकेलिए बाहर चलेजाओ।

(बल्लादिका बाहर प्रस्थान। अचल अपने दुपट्टे को मंदिरके द्वारपर परदेके समान लपेटकर बाहर जाताहै।)

अचल—आज इस महान विपत्तिमें जिस शिशुका जन्म हो रहाहै उसीपर हमारी भविष्यकी आशाएं निर्भरहैं।

दुर्गा—(अन्दरसे) बालक होगया।

बल्ल—भ्राता! इस बालकका नाम 'आशा' रखो। भगवान करे एक दिन यह बालक बप्पा रावल और संग्रामसिंह-सा पराक्रमी होकर हमारी आशाओंको सफल करे। चलो, अन्दर चलें।

(सबका अन्दर प्रवेश)

दृश्य – ४

स्थान—देवीक्षेत्र, रणप्रांगण

वीरराय—*आज वीरगण! रणप्रांगणमें मांकी लाज बचानीहै।*
देश-धर्मके शत्रुजनोंके शवकी सेज सजानीहै॥
आज जगतको हिन्दुजातिका विक्रम-शौर्य दिखानाहै।
अत्याचारी दानवगणको समुचित पाठ पढ़ानाहै॥

कणराय—*बढ़ो वीरगण! बढ़ो वीरगण! मूलीसा अरिदल काटो।*
रुण्डमुण्डसे शत्रुजनोंके गिरि-कन्दर-घाटी पाटो॥
मातृभूमिके रजकण-कणको यवन-रुधिरसे धोडालो।
बढ़ो वीरगण! अमरयश रचो मृत्यु-भीतिको खोडालो॥

कविराय—*लक्ष-लक्ष हिन्दूजन अपने देशहित मरे कटकटकर।*
लक्ष-लक्ष हिन्दू अबलाएं मिटी अग्निमें जलजलकर॥
उनके यह बलिदान न होंवें व्यर्थ तुम्हारे तन रहते।
शत्रुजनोंकी आश न फूलें वीरो! तन-जीवन रहते॥

चंदावत—वीरो ! बप्पा रावल, संग्रामसिंह और प्रतापकी वीरभूमिपर आज फिर अत्याचारी यवनोंने आक्रमण कियाहै। जो कार्य वीर अकबर और उसके पिट्ठू नीच मानसिंहसे सिद्ध न होसका उसे मद्यप जहांगीर पूराकरनाचाहताहै! चित्तौड़ दुर्गकी ओर दृष्टि डालो और उन पराक्रमी वीरोंका स्मरणकरो जिन्होंने एक-एक अंगुल भूमिकेलिए अपने प्राणोंको बलिदान करदिया किन्तु मातृभूमिको विदेशी विधर्मियोंसे पददलित न होनेदिया। उन वीरांगनाओंकेलिए मस्तक झुकाओ जिन्होंने अपने कुसुमकाय को जीवित होम करदिया किन्तु अपने सम्मान और सतीत्वपर नीच यवनोंकी दृष्टि न पड़नेदी।

अमरसिंह—सुनो, युद्धके वाद्य बजरहेहैं। वीरो ! मातृभूमिके गौरवका स्मरण रखतेहुए शत्रुओंपर टूटपड़ो।

सांमत और सैनिक—भगवान एकलिंगकी जय ! मातृभूमि मेवाड़की जय ! शिशोदियाकुलकी जय ! महाराणा अमरसिंहकी जय !

चन्दावत सरदार—महाराणा ! आपके शैथिल्य त्यागकर रणप्रांगणमें पधारनेका समाचार सुनते ही मेवाड़भरमें नवीन जीवन और नवीन उत्साहका संचार होगयाहै। घर-घरसे मातृभूमिके स्वातंत्र्यकी रक्षा और हिन्दूजातिकी लज्जा रखनेके लिए अनेकों नवयुवक वीरोंने अस्त्र-शस्त्र उठाकर रण-प्रांगणकी ओर प्रस्थान कियाहै। उन्हींके जयघोषसे दिग्दिगन्त कंपित हो रहेहैं।

(बांदाठाकुरका प्रवेश)

बांदाठाकुर—श्रीमहाराणाकी जय हो ! मुगलोंकी सेनाके सहस्रों सैनिक हमारे वीर सैनिकोंने मूली-गाजरकी भांति काटडाले हैं। मुगलोंकी सेनामें भीषण त्राहि-त्राहि मचगईहै। स्थान-स्थान पर मुंछकटे दाढ़ीवाले मुंडोंके ढ़ेरके ढ़ेर दिखाईदेरहेहैं।

आसफखां जफरबेग बड़ी कठिनाईसे प्राण बचाकर भाग गयाहै। यवनसेनाके पैर उखड़नेवालेहैं। हमारी विजय निश्चितहै।

(नेपथ्यमें हिन्दुसेनाका पुनः भैरव जयघोष)

(चन्दावत सरदारका प्रवेश)

चन्दावत सरदार—महाराणा! आज महाबली कर्णने असीम साहस और पराक्रम दिखलायाहै। विकराल भैरव यमदूतकी भांति महावीर कर्ण जिस ओर शत्रुओंका रुधिर बहातेहुए निकल पड़तेथे उसी ओर शत्रुदलमें खलबली मचजातीथी। किस समय महाबली कर्ण खड्ग उठातेथे, कब प्रहार करतेथे यह शत्रुमुंडके धराशायी होनेसे ही ज्ञात होताथा। अवतारोंके समान अद्भुत वीरत्व प्रदर्शित करते हुए वीरवरकर्णने शत्रुओंकी प्रधान तोपपर झपटकर अधिकार करलिया और उसका मुख शत्रुसेनाकी ओर मोड़डाला। फिरतो हिन्दुवीरोंने शत्रुदलपर इतना भयंकर प्रहारकिया कि तोपके गोलों और बाणवर्षासे व्याकुल होकर उन्हें भागनाहीपड़ा।

(घायल कर्णका पालकीमें प्रवेश)

अमरसिंह—धन्य वीर कर्ण! आपने महारथी कर्णके समान शत्रुदलको मथन करके अपना नाम अमर करदियाहै। जब-जब हिन्दुजाति अपने देश-धर्मकी रक्षाकेलिए मरमिटनेवाले वीरोंका स्मरण करेगी तब-तब वह आपकेलिए श्रद्धांजलि अर्पित करेगी।

कर्ण—मुगलसेना दुम दबाकर भागगईहै, महाराणा! स्वयं परवेज और आसफखां जफरबेग अपनी बचीखुची सेनाको लेकर आगरेकी ओर भागगएहैं। गुप्तचरने बतलायाहै कि शाहजादा खुसरोने अपने पिताके विरुद्ध विद्रोहका झंडा खड़ाकियाहै।

बांदाठाकुर—तब तो कुछ काल मुगलबादशाहको राजस्थान पर आक्रमण करनेका अवसर न प्राप्त होसकेगा। ये मुगल भी

कैसे बर्बर हैं जो पुत्र पिताके विरुद्ध विद्रोह करदेतेहैं और भ्राता भ्राताओंके रुधिरसे रंजित हाथोंसे सिंहासनपर बैठतेहैं।

अमरसिंह—मुझे अपने कर्त्तव्यकेलिए सचेतकरने और मेवाड़ शिशोदियाकुल तथा हिन्दुजातिका मान रखनेकेलिए चन्दावत वीर! मैं आपका बड़ा कृतज्ञहूँ। आपने मेरे सुप्त हृदयको जाग्रत कियाहै और मेरे हृदयमें अपने वीर वंशके अनुकूल कार्यकरने केलिए प्रेरणा कीहै। हिन्दुस्थानके भावी इतिहासमें आपकी यह गौरवगाथा सदा स्वर्णाक्षरोंमें अंकित होगी, चन्दावत वीर!

चन्दावत—मैं मेवाड़का एक निष्कपट सेवकमात्र हूँ, महाराणा! आपको सचेत करके सेवकने केवल अपना कर्त्तव्यमात्र निभाया है। जब तक एक भी चन्दावतके धड़पर शिर रहेगा, तब तक महाराणा! मातृभूमिके, हिन्दुजातिके, शिशोदियाकुलके, तथा मेवाड़के पुनीत राजवंशके गौरवकी सदा रक्षा कीजाएगी।

सामन्तगण—धन्य! धन्य!

(पटाक्षेप)

अङ्क—२

दृश्य—१

स्थान—आगरा, मुगल दरबार

जहांगीर—मेवाड़के गर्वित मस्तकको नत करनेकेलिए मेरे पिता अकबर महानके समस्त प्रयत्न व्यर्थ हुए। रस्सी जलगई किन्तु ऐंठन न गई। उस वीर प्रतापने वन-वन भटकना, दरिद्रोंसे भी दुखी जीवन व्यतीतकरना स्वीकार किया किन्तु हम मुगलोंकी अधीनता स्वीकार न की। विलासी अमरसिंहकी दुर्वलताओंको सुनकर मुझे आशा थी कि वह हमारे विशाल सैन्यदलसे घबराकर विना युद्धकिए ही आत्मसमर्पण करदेगा। किन्तु मेरी आशाको मिट्टीमें मिलाकर अमरसिंह ने हमारे बीस सहस्र अश्वारोहियोंको मारभगाया और आसफखां जफरबेगको इतनी बुरी तरह आहत किया कि अब वह मेवाड़का नाम लेनेसे घबराताहै।

वजीर—जहांपनाह! भला हुआ शाहजादा परवेज सकुशल लौटआए। इन मेवाड़वासियों से लड़ना भूखे सिंहसे जूझनाहै। अपनी वीरताके कारण ही ये अभी तक स्वतंत्रतासे मस्तक उच्च किएहुएहैं।

जहांगीर—किन्तु मेवाड़के उच्च मस्तकको मिट्टीमें मिलाए विना जहांगीर विश्राम न लेगा। गगनमंडलमें एक ही सूर्य रह सकताहै। वनमें एक ही सिंहका साम्राज्य होताहै। हिन्दुस्थानमें एक ही शहंशाह रहसकताहै, और जितने शाह हैं, उन्हें उसके सन्मुख शिर झुकानाहोगा।

वजीर—ठीक है जहांपनाह! इस्लामकी सलतनतमें स्वतंत्र काफिरकेलिए स्थान न होनाचाहिए।

जहांगीर—जहांगीर यदि हिन्दु-मुसलमानके भेदको भी अपने नेत्रोंके सन्मुखसे हटादे तोभी वह उस आर्थिक और राजनीतिक संकटकी ओरसे उदासीन नहीं रहसकता जो हमारे व्यापारी काफिलोंकेलिए प्रति क्षण बनारहताहै, जब वे उत्तरके धनी प्रांतोंसे बहुमूल्य सामग्रीको लेकर मेवाड़के निकट होतेहुए सिन्धुतटके बंदरोंकी ओर अग्रसर होतेहैं और जब वे गुजरातके अपार द्रव्यको लेकर लौटतेहैं।

वजीर—आपका कथन सत्य है, जहांपनाह! मेवाड़के इस विष-वृक्षको जड़से उखाड़कर इस संकटको, मार्गके इस कंटक को मिटाना ही होगा।

जहांगीर—कंटकको कंटकसे ही निकालाजासकताहै। हाथी को फंसानेमें हाथी ही समर्थ होताहै। गर्वोद्धत राणा अमरसिंहको वशीभूत करनेका कार्य राणा सागरसिंहसे ही होसकेगा। राणा सागरसिंहको हम आजसे मेवाड़का महाराणा नियुक्त करतेहैं। इनकेलिए बहुमूल्य खिल्लत एक हीरे मोतियोंसे जड़ाहुआ खड्ग एक दससहस्र मूल्यकी मोतियोंकी माला, एक राजसी पोशाक, और एक हाथी आज ही दियाजावे। आजसे इन्हें पांच हजार जात और सवारका मनसबदार नियुक्त कियाजाता है।

सागरसिंह—(*सिजदाकरके*) जहांपनाहकी असीम कृपाकेलिए सागरसिंह सदा कृतज्ञ रहेगा। मेरे मेवाड़में पदार्पण करतेही वे समस्त हिन्दुवीर जो आज अमरसिंहका साथ देरहेहैं। उस कायर को त्यागकर मुझसे मिलजाएंगे। मैं इस खड्गकी शपथ लेकर कहताहूँ कि समस्त मेवाड़को रौंदकर अमरसिंहको बन्दी बना लूंगा। और मेवाड़के प्रत्येक दुर्गपर मुगलोंका झंडा लहरादूंगा।

जहांगीर—धन्य वीर! ऐसी कठिन प्रतिज्ञा महाराणा सागर सिंहके अतिरिक्त और कौन करसकताहै? महावीर महाबतखां!

पन्द्रह सहस्र अश्वारोही, पांचसौ तेहादी, दो सहस्र बन्दूकची और ऊंटों तथा हाथियोंसे खींचीजानेवाली अस्सी विशाल तोपें लेकर महाराणा सागरसिंहको चित्तौड़के सिंहासनपर प्रतिष्ठित करनेके लिए आज ही प्रस्थान करदो।

महावतखां—जहांपनाह! महावतखांकी विशाल सेनाके पदभारसे शीघ्र मेवाड़की वीरभूमि कंपित होउठेगी। पेशोला सागरके पास अमरमहलमें विलास-मग्न महाराणा अमरसिंह भयसे थर्राउठेगा और मेवाड़भूमि मुगलेश्वरके जयजयकारसे गूंजित होउठेगी।

जहांगीर—जाओ, वीरो! आजके दिनको हिन्दुस्थानके इतिहासमें चिरस्मरणीय बनाकर सदाकेलिए अमरत्व प्राप्तकरो।

दृश्य—२

स्थान—रणपुर, रणप्रांगण

चन्दावतसरदार—मेवाड़की महिमा अपारहै, महाराणा! मृत वीरोंकी चिताभस्मसे सहसा नवीन वीरपुरुष उत्पन्न होगएहैं। जिन्होंने देश, धर्म और हिन्दुजातिकी मानमर्यादाकी रक्षाकेलिए प्राणोंकी बाजी लगाकर आक्रमणकारियोंका मानमर्दन कियाहै। देवीक्षेत्रके महासमरमें आसफखां जफरबेग और शाहजादा परवेज अपने बीस सहस्र सैनिकोंका विनाश देखकर प्राण बचाकर भागगए। खामनौरके युद्धमें बारह सहस्र अश्वारोहियों, दो सहस्र बन्दूकधारियों और सैकड़ों तेहादियों और विशाल तोपोंके गर्वसे गरजनेवाले महावतखांका मानमर्दन हुआ और उसे सहस्रों घायल और मृत सैनिकों, अपार युद्ध-सामग्री, बन्दूकों और तोपोंको खोकर रणक्षेत्रसे पलायन करनापड़ा।

अमरसिंह—किन्तु इस बार तो मुगलोंके सबसे क्रूर सेनापति अब्दुलाखांके अधीन असंख्य यवनसेना पहुँचीहै। देशमें हाहाकार मचाता नगरग्रामोंपर अग्निधधकाता, लूटमारमचाता, नारियों और बच्चोंपर अत्याचार करताहुआ अब्दुला कुंभलमेरकी ओरसे बढ़ताचलाआरहाहै। सुनाहै ऐसा हृदयहीन राक्षस दूसरा नहींहै।

चन्दावतसरदार—राक्षसोंसे राक्षसोंके समान व्यवहार कियाजाएगा, महाराणा! यद्यपि हिन्दुजन यवनोंके समान मानवताको भुलाकर निरपराध प्रजापर अत्याचार नहीं करसकते, किन्तु वे बर्बरोंकी बर्बरताका उत्तर उनका शिरोच्छेद करके देसकतेहैं। अब्दुलाकी बर्बरताने राजस्थानके हिन्दुओंका रुधिर खौलादियाहै। क्षत्रियोंकी बात तो जानेदीजिए। ब्राह्मणोंने भी अर्घा और माला त्यागकर खड्ग हाथमें उठायाहै। वैश्योंने तुला-बाटोंको दूर फेंक रणप्रांगणकी ओर प्रस्थान कियाहै। और भीलों तथा मीणादि वनचर जातियोंने भी अपनी झोंपड़ियोंको त्यागकर शत्रुपर छापामारना आरंभ करदियाहै। जहां मातृभूमि मेवाड़की मान-मर्यादाका प्रश्न आताहै, वहां बिखरीहुई हिन्दुजाति संगठित होजातीहै, और मेवाड़के एक-एक रजकणकेलिए अपना रुधिर बहाडालतीहै।

अमरसिंह—हमारी ओरसे कौन-कौनसे वीर रणभूमिमें उतरेहैं?

चन्दावत सरदार—आज देश-धर्मकी मानमर्यादाकी रक्षाके लिए जो वीर रणक्षेत्रमें उतरेहैं, उन सबको गिनना असंभव है, महाराणा! अपने प्राणोंको तृणवत् समझ शत्रुजनोंका मान मर्दन करनेमें एक-एकसे बढ़कर प्रतिस्पर्धा दिखानेवाले वीरोंसे मेवाड़का सैन्यदल भरापड़ाहै। सहस्रों वीरपुरुष जो आजतक पौरोहित्य,

कृषि या वाणिज्य करतेथे आज एक क्षणमें परिवर्तित होकर युद्ध-कौशल दिखानेलगेहैं। ऐसा कोई सामन्तकुल नहीं जिसके बारह वर्षसे अधिक आयुवाले पुरुष रणप्रांगणमें न आएहों।

(युद्ध-वाद्योंका शब्द)

युद्धवाद्य बजरहे हैं। मुझे आज्ञा दीजिए। सेना मेरी प्रतीक्षा करतीहोगी। *(प्रस्थान)*

अमरसिंह—मेवाड़की लज्जा रखना, चन्दावतवीर!

(कविरायका प्रवेश)

कविराय—मैं अभी कुंभलमेरसे आरहाहूँ। महाराणा! सैकड़ों वर्गमीलमें हिन्दु-गृहोंपर अग्नि धधकरहीहै। निरपराध ग्रामीण हिन्दुओंके शवोंसे मार्ग और खेत भरेपड़ेहैं। बालकोंको पकड़ पकड़कर बलपूर्वक मुसलमान बनाकर बेचाजारहाहै। हिन्दुस्त्रियों के नग्न जलूस निकालेजारहेहैं। चारों ओर अग्निकांड, हत्या, उत्पात और हाहाकार मचाहै। त्रस्त जनता घरोंसे भाग-भागकर वन, पर्वतों और घाटियोंमें छिपरहीहै। *(प्रस्थान)*

अमरसिंह—हाय! हाय! ऐसे भीषण दुर्दिनको रोकनेके लिए ही तो मैंने संधि-प्रस्ताव करनेकी इच्छा प्रकटकीथी। यदि सामंतगण मेरे प्रस्तावको शान्तिपूर्वक स्वीकार करलेते तो आज यह दुर्दिन न देखनापड़ता। चित्तौड़के सिंहासनपर जहांगीरका क्रीतदास मेरा चाचा सागरसिंह महाराणा बननेका अभिनय कररहाहै। यदि इस युद्धमें हमारी पराजयहुई तो मेवाड़का रहासहा भाग भी सागरसिंहके अधीन होजाएगा।

(कर्णरायका प्रवेश)

क्या समाचार है?

कर्णराय—समाचार बड़ा भीषण है, महाराणा! हल्दीघाटीके समान इस रणपुर घाटीके प्रचंडयुद्धमें शत्रुओंका मानमर्दन

करतेहुए आपके प्रथमश्रेणीके प्रमुख-प्रमुख सरदार वीरगतिको प्राप्तहोगएहैं। देवगढ़के ठाकुर दूधो सांगावत महारथी भीमके समान यवनदलमें हाहाकार मचाकर तथा यवनोंके दो मनसब-दारोंको यमलोक पहुंचाकर तोपके गोलेसे उड़गएहैं।

अमरसिंह—हाय, मेवाड़का महान स्तंभ आज भग्न होगया।

कर्णराय—परम प्रतापी नारायण अपनी प्रवल वाणवर्षासे शत्रुशिरोंको काटकर पतंगवत् आकाशमें उड़ातेहुए और धनुषकी टंकारसे यवनोंके हृदयको दहलातेहुए मत्त हस्तीके पद-प्रहारसे कुचलेजानेपर यमलोकको पधारेहैं।

अमरसिंह—हा! तात नारायण!

कर्णराय—महावीर सूर्यमल्ल और परम पराक्रमी यशकर्ण शत्रुजनोंको गाजर-मूलीसा काटतेहुए जब शीघ्रतासे शत्रुओंका पीछाकरतेहुए शत्रुव्यूहमें बड़ी दूर तक घुसगए तो हमारे सैनिक उनके साथ-साथ अग्रसर न होसके। असंख्य शत्रुदलमें वीर द्रोण और दुर्योधनके समान वीरत्व प्रदर्शित करतेहुए वे दोनों वीर धराशायी हुएहैं।

अमरसिंह—हाय! हाय! आज मेवाड़ वीरशून्य होगया। जिनके प्रबल स्कन्धोंपर मेवाड़का साम्राज्य स्थिर था वे महावीर दूधो सांगावत, नारायणदास, सूर्यमल्ल और यशकर्ण वीरगतिको प्राप्त होचुकेहैं। अब मेवाड़की रक्षाकी क्या आशा होसकतीहै? जाओ, कर्णराय! युद्धके समाचार निरंतर लाकर मुझे सुनातेरहो।

(कर्णरायका प्रस्थान)

(पूर्णसिंहका शिर लेकर वीररायका प्रवेश)

वीरराय—यह कलियुगके अभिमन्युका शिर है महाराणा! शक्तावत भानुसिंहके पुत्र इस वीर युवक पूर्णसिंहने सिंहशावकके

समान शत्रु-दलमें प्रवेश करके हाहाकार मचादिया। विद्युत चक्रके समान आशुवेगसे अपने प्रखर खड्गको घुमातेहुए इस वीरने शत्रुके रुण्डमुंडोंकी झड़ीलगादी। जानुपर्यंत शत्रु-रुधिर-सरिताको पारकरताहुआ यह वीर जिधर हुँकारताहुआ दृष्टि डालताथा उधर ही यवनोंमें त्राहि-त्राहि मचजातीथी। इस प्रचंड वीरके पराक्रम और युद्ध-कौशलको देखकर सहस्रों शत्रु-सैनिक स्तब्ध रहगए। मुगल-सेनापति अब्दुलाके रण-हस्तीपर झपटकर इस वीरने सहसा इतना कठिन प्रहारकिया कि हस्तीकी सूंड कटकर गिरगई और वह चिंघाड़ता, यवन सैनिकोंको कुचलता हुआ रणप्रांगणसे भागखड़ाहुआ। घटोत्कचके समान यह वीर अकेलाही विशाल यवनसैन्यको प्रलयके घाट उतारदेता यदि सहसा तोपके एक गोलेने आकर इसको धराशायी न कर दियाहोता।

अमरसिंह—(*पूर्णसिंहका शिर हाथमें लेकर*) बालक पूर्णसिंह! अद्भुत वीरत्व दिखाकर रण-क्षेत्रमें अपने प्राण उत्सर्ग करके तुमने मातृभूमि, शिशोदिया-कुल और शक्तावतोंका मान रखाहै। जब तक हिन्दुस्थानमें पूर्णसिंह-जैसे वीर बालक उत्पन्न होतेरहेंगे तबतक मरणासन्न होनेपर भी हिन्दुजाति पुनः जीवित होउठेगी। वीर पूर्णसिंहकी वीरगतिके पश्चात् अब शक्तावतकुल का अन्त समझनाचाहिए। अब उस कुलमें अभागे भानुसिंहके अतिरिक्त कोई न रहा।

मंत्री—भानुसिंहके अचलादि सोलह भ्राता अभी सकुशल हैं, महाराणा! शत्रुंजयकी यात्रामें मेरा अचल, बल्ल आदिसे परिचय हुआहै। वे इस समय ईडर राज्यमें हैं। बल्ल-जैसा विकट वीर इस कलिकालमें न हुआहै, न हो सकेगा। ईडरमें आधी रात को भयंकर तूफानसे मेरे विशाल तंबूकी खूंटियां उखड़गईं तो

तंबूको रोकनेकेलिए ज्योंही मैंने और मेरी स्त्रीने तम्बूको पकड़ा त्योंही हम दोनों भी तम्बूके साथही उड़गए। उस समय आकाशमें उड़तेहुए तम्बूकी लटकतीहुई रस्सियोंको बलपूर्वक खींचकर बल्लने मेरी और मेरी स्त्रीकी प्राण-रक्षा की। ऐसे प्रबल वीरोंको मेवाड़में बुलालेनाचाहिए, महाराणा !

अमरसिंह—अवश्य, आजही दूत भेजकर उन्हें बुलालो।

(चन्दावत सरदार और कई यवनोंका युद्ध करतेहुए प्रवेश)

चन्दावत सरदार—सावधान महाराणा ! यह जानकर कि आप इधर एकाकी हैं, अब्दुलाने एक प्रबल दल आपको हानि पहुंचाने इधर भेजाहै। संभलिए, खड्ग निकालिए, प्रहार करिए। भागिए, भागिए ! सर्वनाश ! आप घिरगए।

(कई यवनोंका महाराणाको घेरना। युद्ध करते-करते साद्रीपति झाला और राठौर हरिदासका प्रवेश। हरिदास चटपट महाराणाके पास पहुँचकर उनका राजमुकुट अपने शिरपर पहनताहै। झाला वीर और चन्दावत सरदार महाराणाको धक्का देकर यवनोंके घेरेसे बाहर निकालदेतेहैं।)

चन्दावत सरदार—बस जाओ। *(अमरसिंहका पलायन)*

हरिदास—यवनो ! यदि तुम्हें अपने पौरुषका गर्वहै तो आओ देखो हिन्दुओंका खड्ग-कौशल ! *(दो-तीन युवकोंको मारडालताहै)*

एक यवन सैनिक—खड्ग कौशल अब दिखाओ। *(गोलीसे हरिदासको मारगिराताहै।)*

(हरिदासके गिरतेही अनेक यवन सैनिक उसका शिर काटकर लेजानेकेलिए लड़नेलगतेहैं।)

(अनेक हिन्दुसैनिकोंका प्रवेश)

चन्दावत सरदार—मृत सिंहकी मूंछोंको उखाड़कर अपनी

वीरता प्रदर्शित करनेके इच्छुक यवनो ! लो, अपने कुकृत्योंका फल प्राप्तकरो ।

[युद्ध, अनेक यवनोंकी मृत्यु और शेषका पलायन]

(बांदा ठाकुरका प्रवेश)

बांदा ठाकुर—मुगलोंके डेरे उखाड़नेकी आज्ञा होचुकीहै, चन्दावत वीर ! अब्दुला अपने शेष सैन्यको एकत्रितकरके भागनेका प्रयत्न कररहाहै ।

चन्दावत सरदार—शीघ्र मुगलोंके डेरोंपर छापामारकर उनकी समस्त युद्ध-सामग्री छीनलेनीचाहिए ।

बांदा ठाकुर—इसी प्रयत्नमें तो वीरकेशरी केहरिदास कछुवाहा, वैदलाके चौहान केशवदास, मुकुन्ददास राठौर और जयमलौत वीरोंके अभी कुछ काल पूर्व प्राण गएहैं ।

चन्दावत सरदार—इन सब वीरोंको वीरगति प्राप्तहोगई तब तो हम सबको सहसा आक्रमण करके इनके वधका परिशोध लेना चाहिए । चलो ।

(सबका प्रस्थान)

दृश्य—२

स्थान—चित्तौड़, सागरसिंहका शयनागार

सागरसिंह—(*शय्यापर लेटेहुए*) महत्वाकांक्षासे अन्धा होकर मैंने क्या करडाला ? अपने भ्राता परमप्रतापी प्रतापके विरुद्ध देश-धर्मके शत्रु मुगलोंका साथदिया । मुगलोंका क्रीतदास बनकर चित्तौड़के सिंहासनपर बैठा । महाराणा बननेका स्वांग रचा ! किन्तु मुझ देश-द्रोही, धर्म-द्रोहीकी और किसीने झांका तक नहीं । सबने मेरी ओर तिरस्कारसे थूका । (*सोताहै और स्वप्न देखताहै ।*)

(बप्पा रावलका प्रवेश)

बप्पा रावल—बप्पा रावलके वीर-वंशपर कलंक पोतनेवाले नीच सागरसिंह ! चुल्लूभर जलमें डूबकर मरजा। अरे चांडाल ! जिन देश-धर्मद्रोही,गोघाती यवनोंके चंगुलसे हिन्दुस्थानका उद्धार करके मैंने उन्हें बलख, बुखारा, समरकन्द तक खदेड़ाथा, उन्हीं यवनोंका क्रीतदास बनकर नीच ! तूने आज मेरे पावन सिंहासन को स्पर्श करनेका साहस कियाहै। निकलजा, पावन मेवाड़भूमिसे निकलजा। भागजा, वीरभूमि चित्तौड़को कलंकित न कर।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह!" कहकर सबकी बाणी ॥

(अन्तर्धान)

सागरसिंह—(*स्वप्नमें थरथर कांपताहुआ*) यह वीर बप्पा रावल थे। मुझे बार-बार कितनी क्रुद्ध दृष्टिसे देखतेथे !

(महाराणी पद्मिनीका प्रवेश)

पद्मिनी—शिशोदिया-कुल-कलंक पामर सागरसिंह ! जिस मातृ-भूमि मेवाड़के गौरवकी रक्षा करनेकेलिए, हिन्दुजातिके मस्तकको उच्च रखनेकेलिए और देश-धर्म और सभ्यताके शत्रु यवनोंका दमन करनेकेलिए मैंने अपने हाथोंसे एक-एक करके अपने तेरह पुत्रों और अपने पतिको रणवेशमें सजाकर मृत्यु-मुखमें झोंका, और स्वयं सहस्रों नागरिक नारियों और बच्चोंको अपने ही साथ जीवित चितामें होमकिया उसी मातृभूमि मेवाड़को विदेशी विधर्मियोंकी दासताके बन्धनमें बांधतेहुए तुझे लज्जा नहीं आती निकलजा नीच! चित्तौड़की पावनभूमि छोड़कर भागजा।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह!" कहकर सबकी वाणी ॥

(अन्तर्धान)

हिन्दुस्तान एकेडमी, इलाहाबाद

सागरसिंह—(स्वप्नमें कांपताहुआ) यह भगवती पद्मिनी थी। अपने केशोंको बखेरे, रक्तवस्त्र धारणकिए, हाथमें त्रिशूल लिए साक्षात् भगवती दुर्गाकी भांति दिखाईदेतीथी। ओह! मुझपर कितनी क्रुद्ध थी।

(राणा कुम्भका प्रवेश)

कुंभ—अरे चांडाल सागरसिंह! उस विजयस्तंभको देख जिसे देश-धर्म-द्वेषी यवनोंका मानमर्दन करके हिन्दुजातिकी गौरवगाथाके स्मारक-स्वरूप मैंने स्थापितकियाथा, और दूसरी ओर अपनी कायरता और नीचतापर दृष्टि डाल। एक ओर जहां यह विजयस्तंभ शताब्दियों तक देश-धर्मकी रक्षाकेलिए बलिदान होजानेवाले हुतात्माओंकी कीर्ति-पताका दिग्दिगन्तमें फहरातारहेगा, दूसरी ओर तुम्हारे ये नीच कृत्य शताब्दियोंतक अपनी कालिमा स्थिर रखेंगे।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह!" कहकर सबकी वाणी"

(अन्तर्धान)

सागरसिंह—(स्वप्नमें) ओह! यह परम प्रतापी महाराणा कुंभ मुझे कितनी तिरस्कार-भरी दृष्टिसे देखतेथे।

(महाराणा प्रतापका प्रवेश)

प्रताप—नीच सागरसिंह! जिस मातृभूमिके रजकण-कणके लिए लक्ष-लक्षवीरों ने अपने रुधिरकी सरिताएं बहादीं, और लक्ष लक्ष वीरांगनाओंने अपने शरीरको जीवित चितामें होम करदिया, जिस मातृभूमिकी लज्जा रखनेकेलिए मैंने वन-वन भटकना स्वीकार किया, दाने-दानेकेलिए अपने स्त्री-बच्चोंको तड़फाया, जिस मातृ-भूमिको स्वतन्त्रताकी रक्षाकेलिए मेरे साथ सहस्र-सहस्र वीर हल्दीघाटीके भीषण युद्धमें मरमिटे, उसी मातृभूमिको तूने विदेशी,

विधर्मियोंकी दासतामें वद्धकरनाही अपने जीवनका उद्देश्य बनायाहै। नीच सागरसिंह! इस वसुधाको तुमही वक्षस्थलसे बांधकर अपने साथ अपरलोकको लेजाओगे।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह!" कहकर सबकी वाणी॥

(अन्तर्धान)

(भीषण वज्र-गर्जन। भैरवनाथका प्रवेश। सागरसिंहका चौंककर जागना और थरथर कांपना)

भैरवनाथ—महान शिशोदिया-कुलमें जन्म लेकर भी यवनोंके क्रीतदास पामर सागरसिंह! एक क्षणमें पवित्र चित्तौड़भूमिसे भागजा। चित्तौड़का सिंहासन तुझ-जैसे कुलकलंक, देश-धर्मद्रोही, निर्लज्जकेलिए नहीं है।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह" कहकर सबकी बाणी॥

निकल, नहीं तो अभी इसी त्रिशूलसे तेरा संहार करताहूँ।

(भैरवनाथ अन्तर्धान होतेहैं। सागरसिंह मूर्छित होकर गिरपड़ताहै।)

(सेवकका प्रवेश)

सेवक—भीषण वज्र-गर्जनको सुनकर मेरा हृदय अभीतक कांपररहाहै। हाय! यहां तो महाराणा मूर्छित पड़ेहैं। यह कैसे हुआ? क्या किसीने छिपकर महाराणापर आक्रमण कियाहै? महाराणा जी! महाराणा जी!

सागरसिंह—*(चैतन्य होकर)*

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह!" कहकर सबकी वाणी॥

नीच सागरसिंह 'महाराणा' जैसे पावन शब्दसे सम्बोधित होनेके योग्य नहींहै, विक्रम !

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी ।
थूकेगी 'धिक् धिक् सागरसिंह !' कहकर सबकी वाणी ॥

अपने कुकृत्योंके कारण मुझ कायरने मातृभूमि मेवाड़ और चित्तौड़में रहनेका अधिकार खोदियाहै। अब मैं चित्तौड़में मुगलों का क्रीतदास रहकर महाराणा बननेका स्वांग न करूंगा। चित्तौड़ के सिंहासनका अधिकारी महात्मा प्रतापका पुत्र अमरसिंह है।

सेवक—महाराणा ! आप यह क्या कहतेहैं ?

सागरसिंह—

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी ।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह !" कहकर सबकी वाणी ॥

मैं आजही, इस निशामेंही, इस पावन भूमिको त्यागकर पार्वती और चम्बलके संगमपर स्थित कन्दर दुर्गमें चलाजाऊंगा। अब अपने शेष जीवनको अपने कुकृत्योंकेलिए पश्चात्ताप और प्रायश्चित्त करनेमें लगादूंगा। जाओ, महाराणा अमरसिंहको सूचनादो कि वे प्रातः ही आकर चित्तौड़पर अधिकार करलें।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी ।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह !" कहकर सबकी वाणी ॥

सेवक—जो आज्ञा। (*प्रस्थान*)

सागरसिंह—

युग-युगान्त तक अमर रहेगी तेरी पाप-कहानी ।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह !" कहकर सबकी वाणी ॥

(*उन्मत्तवत् प्रस्थान*)

दृश्य—४

स्थान—चित्तौड़, राजप्रासाद

कर्णराय—आजका शुभ दिन हिन्दुस्तानके इतिहासमें सदा अमर रहेगा। आज हिन्दुजातिके मस्तकमणि मेवाड़-मुकट चित्तौड़का विधर्मी, विदेशी यवनोंके पाशसे उद्धार हुआहै। आज चित्तौड़के सिहासनपर पुनः बप्पा रावलके वंशज प्रतिष्ठित हुएहैं। आज चित्तौड़ दुर्गपर फिरसे हिन्दुध्वज लहरानेलगाहै। मंदिरोंमें घंटा-शंखध्वनि हानेलगीहै। गोमाताएं निःशंक होकर चरने लगीहैं। हिन्दु-नारियां निर्भय होकर जलाशयों और खेतोंमें जानेलगीहैं। आज बप्पा रावल और संग्रामसिंह आकाशसे पुष्प-वर्षा कररहेहैं। आज महाराणा उदयसिंह और प्रतापकी आत्माएं अपने वीर वंशजको यह कहतेहुए आशीष देरहीहैं कि 'वीर! जो दुष्कर कार्य हमसे न हासका वह तुमने करदिखाया।'

उपस्थितजन—एकलिंग भगवानकी जय! महाराणा अमर सिंहकी जय।

अमरसिंह—मेरे वीर सामन्तो और सैनिको! आपलोगोंने अपने पराक्रमसे मातृभूमिका और हिन्दुजातिका मस्तक उच्च कियाहै। अपना रुधिर बहाकर आपने फिरसे चित्तौड़की वीरभूमि को स्वतंत्र कियाहै। शिशोदिया-कुल-कलंक सागरसिंह चित्तौड़ और निकटके अस्सी दुर्गों और जनपदोंको त्यगकर भागगया है। इस समय इन सबपर हमारा अधिकारहै। गुप्तचरोंसे ज्ञातहुआहै कि बादशाह जहांगीरने अब अपने साम्राज्यके सबसे बड़े धूर्त, बुड्ढे भालू खान-इ-आजम अजीज कोका और शहजादा खुर्रमको असंख्य दल-बादल देकर मेवाड़के विरुद्ध भेजाहै। अभी इस शलभ-दलके मेवाड़ पहुंचनेमें कुछ विलम्ब प्रतीतहोताहै।

चन्दावत सरदार—हमारी वीर भुजाएं समरभूमिमें कौशल

दिखानेकेलिए फड़करहीहैं। हमारे खड्ग शत्रु-रुधिर पीनेकेलिए व्याकुल होरहेहैं। हमारे बाण तूणीरसे निकल शत्रु मुंडोंके साथ उड़जानेकेलिए तड़परहेहैं। हम विलम्ब नहीं सहसकते। महाराणा! शत्रुके आक्रमणकी प्रतीक्षा करनेकी अपेक्षा क्यों न हम स्वयं शत्रुपर आक्रमण करके उससे अनेक जनपदोंको छीन कर अपनी सीमा बढ़ाएं?

सामन्तगण—ठीक है, धन्य! धन्य!

अमरसिंह—ठीक है वीरो! युद्धकेलिए समस्त तैयारी तो है ही। आज ही, निकटके जिन दुर्गोंपर यवनोंका अधिकार है उनपर आक्रमण करदेनाचाहिए।

चन्दावत सरदार—धन्य! धन्य! चन्दावत वीरो! हिरोलके लिए प्रस्तुतहोजाओ।

बल्ल—हिरोलका अधिकार वीर शक्तावतोंको मिलना चाहिए, महाराणा! आज मेवाड़ भूमिमें वीर शक्तावतोंके समान पराक्रमी, धैर्यशील, और युद्धकुशल दूसरा कौन है? एक-एक शक्तावत वीर सौ-सौ यवनोंका रुधिर पीनेवाला है। एक-एक शक्तावत वीरके पदाघातसे भूमि कंपितहोउठतीहै, और आकाश दहलपड़ताहै। घोड़ोंको मुष्टिका मारकर धराशायी करने और हाथीकी सूंड पकड़कर उखाड़-डालनेकी शक्ति इस कलियुगमें शक्तावतोंके अतिरिक्त और किसमें है?

बांदा ठाकुर—क्या हुआ यदि आज एक-दो वीर शक्तावतोंमें निकलआएहैं। पराम्परासे हिरोलका अधिकार चंदावतोंका ही है, जिन्होंने मेवाड़के सिंहासनके लिए बार-बार अपने रुधिर की नदियां बहाईहैं, और शत्रुओंका मानमर्दन कियाहै। बरसाती मेंढककी भांति उछलकर टर्रानेसे कुछ लाभ नहीं बनता, बल्ल!

बल्ल—बांदा! तनिक जिह्वा संभालकर बोलो, नहीं तो

अभी तुम्हारी जिह्वा उखाड़कर फेकदूंगा। हिरोलके अधिकारका निर्णय बल-पौरुषसे होसकताहै न कि परम्परासे। एकबार आपके पूर्वज चंडने कुछ त्याग करदिया बस उसीके नामपर आप लोग शताब्दियोंतक उछलते-कूदते और टुकड़े पातेरहेंगे ? हम लोगोंने भी क्या चंडकी ही भांति भिंसरोर दुर्ग अपने भ्राताकेलिए नहीं त्यागदिया ?

बांदाठाकुर—त्यागदिया ? भिंसरोरसे तुम्हें भानुजीने धक्के देदिए और तुम नगर-नगर, गांव-गांव भिक्षा मांगते-फिरतेरहे। और आज कहतेहो "हमने भिंसरौर दुर्ग त्यागदिया" ! इसीको कहतेहैं "अशक्तश्च भवेत्साधुः"।

बल्ल—इतनी उद्दण्डता ! दिखाएं तुम्हें अपनी अशक्तता ? शक्तावत वीरो ! क्या देखतेहो ? अपने खड्ग निकालो और अभी चन्दावतोंका रुधिर बहाकर निर्णय करदो कि हिरोलका अधिकारी कौनहै।

बांदाठाकुर—शक्तावतोंके खड्ग चन्दावतोंके खड्गसे तीक्ष्णतर नहीं हैं। लाल-लाल आंखें क्यों दिखातेहो ? तुम्हारे इन लाल-लाल नेत्रोंको देखकर घबरानेवाला कोई चन्दावत नहीं, चन्दावत वीरो ! आजहमारे खड्ग शक्तावतोंका रुधिर पीकरही शान्तहोंगे। आज इन्हें दिखादेनाहोगा कि चन्दावतोंके किस बल-पौरुषके कारण उन्हें हिरौलका अधिकार मिलाहै।

(चन्दावत और शक्तावत वीर युद्धकेलिए प्रस्तुत होतेहैं।)

(विष्णुदासका भागतेहुए प्रवेश)

विष्णुदास—*(सहसा दोनों दलोंके मध्यमें घुसकर)* शिशोदिया-कुलके पुरोहित मेरे पूज्य पिताने प्रताप और शक्तिसिंहकी कलहाग्नि को अपने रुधिरसे बुझायाथा। आज वीर चन्दावतों और शक्तावतोंके मध्य जो भीषण भ्रातृ-युद्ध होनेवालाहै, वह मेरे रुधिरसे शान्त होवे। वीर चन्दावतो और शक्तावतो ! तुम्हारे

जिन प्रचंड खड्गोंने देशकी स्वतन्त्रता तथा धर्मके शत्रु यवनोंका रुधिर पानकरनाथा, उन्हें आप अपने भ्राताओंके वक्षस्थलोंपर परखनाचाहतेहैं। यदि तुम्हें अपने वीरत्वकी श्रेष्ठता सिद्ध करनी ही है तो इस ब्राह्मण विष्णुदासका रुधिर बहाकर सिद्धकरो।

अमरसिंह—ब्राह्मणका रुधिर बहाकर वीरत्वकी परीक्षा नहीं होसकती। मुझे चन्दावत और शक्तावत दोनों वीर-कुल प्यारे हैं, दोनोंने मेवाड़की महान सेवाएं कीहैं, और इस विपत्तिके समयमें दोनोंकी सेवाओंकी मेवाड़को अत्यधिक आवश्यकता है। वीर चन्दावतो और शक्तावतो! निकट ही उंटला दुर्गपर अभी तक यवन-पताका फहरारहीहै। जो वीर-कुल उंटलासे यवन-ध्वज उखाड़कर उसपर सबसे पहले हिन्दु-ध्वज लहरासकेगा उसी वीर-कुलको हिरोलका अधिकारी समझाजाएगा।

सामन्तगण—धन्य! धन्य! यह सच्ची परीक्षा है।

बल्ल—चलो, चलो, शक्तावत वीरो! उंटलापर हिन्दु-ध्वज फहराकर हिरोलके अधिकारी बनो।

बांदाठाकुर—चलो, चलो, चन्दावत वीरो! उंटलासे यवन पताका फाड़कर हिरोलके अधिकारी बनो।

समस्त—भगवान एकलिंगकी जय! शिशोदिया-कुलकी जय! मातृभूमि मेवाड़की जय! महाराणा अमरसिंहकी जय!

(सबका प्रस्थान)

दृश्य—५

स्थान—आगरा, मुगलदरबार

जहांगीर—कहां है वह सागरसिंह धूर्त ?

दरोगा—यह है जहांपनाह! इसे हम आपकी आज्ञासे कन्दर दुर्गसे बन्दी बनाकर लाएहैं।

जहांगीर—कायर सागरसिंह! हमसे विश्वासघात करके हमारे चित्तौड़ दुर्गको अमरसिंहके हाथमें सौंपते समय तुम्हें स्मरण नहीं था कि ऐसे अपराधका दंड तुम्हें क्या मिलसकताहै ? जिस चित्तौड़ दुर्गको हस्तगत करनेकेलिए मेरे पिता शाहंशाह अकबर और मैंने अपने सहस्रों बहादुर सैनिकोंका रुधिर बहाया और लाखों रुपया खर्चकिया, उसे निःशंक अमरसिंहके हाथोंमें सौंपनेके अपराधमें तुम्हें कुत्तोंसे कटवायाजाएगा।

सागरसिंह—चित्तौड़दुर्ग सदासे मेवाड़के महाराणाका रहाहै और रहेगा। वह दुर्ग हिन्दुस्थानका मस्तकमणि, हिन्दु-जातिका सर्वोच्च तीर्थ, और मेवाड़का किरीट है। जिस चित्तौड़के रज-कण-कणकेलिए मेरे पूर्वजों और जवाहरबाई, रतनसिंह, बप्पा रावल आदिने तथा गोरा बादल, जयमल-पत्ता, आदि लाखों हिन्दुओंने अपना रुधिर बहायाहै, जिसकी रक्षाकेलए पद्मिनी, कर्मदेवी आदि लाखों हिन्दु-वीरांगनाओंने अपने शरीरको जीवितही चितामें भस्मकियाहै, उसे मैं नीच शिशोदिया-कुलमें जन्म लेनेपरभी कबतक विदेशी विधर्मी यवनोंके अधीन देख सकताथा। मेरे दुर्बल बाहुओंद्वारा चित्तौड़से यवनोंका भगाया जाना असंभवथा। अस्तु, दुर्गके वास्तविक अधिपतिको उसका दुर्ग सौंपकर सागरसिंहने कोई अपराध नहीं कियाहै।

जहांगीर—चोरी भी और सीनाजोरी भी।

सागरसिंह—चोर-डाकू तुम हो, मुगल बादशाह ! जो हिन्दुस्थानके नरेशोंसे उनका राज्य छीननेमें सतत प्रयत्नशील हो। हम हिंदुस्थानके निवासी अपने देशमें अपने दिन शान्तिपूर्वक बितारहे थे। तुम्हारे दादा बाबरने सहस्रों मील दूरसे आकर हमारे देश पर आक्रमणकिया, रुधिरकी नदियां बहाईं और दिल्लीका साम्राज्य छीनलिया। मेवाड़के राणा अपने वन-पर्वतोंमें शान्ति पूर्वक दिन बितातेथे किन्तु तुम लोगोंने अपने साम्राज्यकी समस्त शक्ति लगाकर मेवाड़पर आक्रमणकिया और हाहाकार मचादिया। अपने हृदयको टटोलकर देखो कौन चोर है ? मुगल बादशाह या महाराणा ?

जहांगीर—बस, बस।

सागरसिंह—बस क्यों और कबकेलिए ? भौंहें चढ़ाकर मुझे क्यों घूरते हो, मुगलेश्वर ? मैं जहांगीरके कुत्तोंसे नहीं डरता। अपने भ्राता महात्मा प्रतापके विरुद्ध तुम्हारे पिता और तुम्हारा साथ देकर सागरसिंहने जो महान अपराध कियाहै, और तुम्हारा क्रीतदास बनकर चित्तौड़के सिंहासनपर बैठ कुछ दिन तक महाराणा बननेका जो स्वांग रचाहै उस महापातकके कारण आत्मग्लानिसे मेरा अङ्ग-अङ्ग प्रज्वलित होरहाहै।

युग-युगान्त तक अमर रहेगी मेरी पाप-कहानी।
थूकेगी "धिक् धिक् सागरसिंह !" कहकर सबकी वाणी ॥

इस महान कुकृत्यका प्रायश्चित अब मेरे रक्तसे ही होसकेगा। पामर सागरसिंह। शिशोदिया-कुल-कलंक सागरसिंह ! मेवाड़के उच्च कुलमें जन्म प्राप्त करके भी मुगलोंके क्रीतदास सागरसिंह ! धो, अपने रुधिरसे अपने जीवन-भरके पापोंको धो।

(खड्ग अपने वक्षस्थलमें घुसेड़देता है।)

जहांगीर—जीवन-भर अपने दरबारमें पालकर, अनेकों खिल्लत, बहुमूल्य द्रव्य और चित्तौड़का सिंहासन देकरभी हम सागरसिंहको न खरीदसके। अंतिम समय उसका शिशोदिया-रक्त पुनः समस्त प्रलोभनोंको भुलाकर प्रवल होगया। इसकी लाश उठाकर बाहर फेंकदो।

(दो-तीन सेवकोंका सागरसिंहका शव उठाकर प्रस्थान)

वजीर—जहांपनाह! शाहजादा खुर्रमने खान-इ-आजम अजीज कोकापर कुछ गंभीर आरोप लगाएहैं और लिखाहै कि अजीज कोका युद्धका संचालन उचित रीतिसे नहीं कररहाहै जिससे राणा अमरसिंहका हौसला दिन-प्रतिदिन बढ़ता-जारहाहै। इसलिए उसे वापिस बुलालियाजाए।

जहांगीर—अजीज कोका सबसे बड़ा धूर्त और बूढ़ा भेड़िया है। उसके सम्बन्धमें गंभीरता पूर्वक विचार करनेकी आवश्यकता है। यह संध्याको होसकेगा।

(पटाक्षेप)

अङ्क—३

दृश्य—१

स्थान—उंटला दुर्गके बाहर

वीरराय—

शक्तावत वीरो ! बल-विक्रम पौरुष आज दिखानाहै ।
अमर वीरजन, देशभक्तगणमें निज नाम लिखानाहै ॥
क्षणभंगुर जीवन, कब किसने युग-युगतक जगमें पाया ?
हुआ अमर नर वह मरकर भी सुयश-काय जिसने पाया ॥
आज वीरता दिखलाओ वह जिससे दिग्गज कांपउठें ।
आज धीरता दिखलाओ वह जिससे पर्वत कांपउठें ॥
आज झपट उंटला दुर्गपर हिन्दु-ध्वज लहरानाहै ।
युग-युग तक मेवाड़ सैन्यके शुभ हिरोलको पानाहै ॥
उठो वीर ! तुम गरज सिंह-से हाथी-से चिंघाड़उठो ।
यवन-जनोंके दिल दहलाते व्याघ्रों-से सुदहाड़उठो ॥

अचल—वीर शक्तावतो ! अभी तक चन्दावत नहीं पहुंचेहैं । गुप्तचर द्वारा ज्ञातहुआहै कि वे मार्ग भूलकर एक दलदलमें जाफंसेहैं । उनके यहां पहुँचनेसे पूर्व ही वीरो ! उंटला दुर्गपर अधिकार करके हिरोल प्राप्त करनाहै ।

(भानुसिंहका प्रवेश)

भानुसिंह—मेरे वीर भ्राताओ ! आप लोगोंकेलिए मैंने भिंसरोर दुर्ग इसलिए रुद्ध कियाथा कि आप लोगोंका बल-पौरुष केवल उसी दुर्गमें रुद्ध न रहजाए । मुझे हर्ष है आप वीरोंने अनेक दुर्गोंपर अधिकार कियाहै, और शक्तावत-कुलका मान बढ़ायाहै । भिंसरोर आप लोगोंका है, और रहेगा । आज सब भ्राता मिल-जुलकर शक्तावत-कुलका मान बढ़ाओ ।

बल्ल—आपने जो कुछ किया भ्राता ! उसकेलिए हमें कोई दुःख नहीं। बढ़ो वीरो ! बढ़ो। आज सबसे विकट वीरत्व दिखाओ। यह उंटला दुर्ग सब प्रकारसे सुदृढ़ है। ऊंचे टीलेपर बनायागयाहै और इसके चारों ओर पत्थरका परकोटा है। इस परकोटेके ऊपर बीच-बीचमें एक-एक गोलाकार रक्षकशाला बनीहुईहै। इस विशाल दुर्गमें प्रवेशकरनेका एक ही द्वार है जिसके कपाटोंपर सुदृढ़ और तीक्ष्ण लौह-कीलें लगीहुईहैं। जिस प्रकार भी हासके, इस द्वारको तोड़कर अन्दर प्रवेशकरनेका प्रयत्नकरनाचाहिए।

(सब मिलकर अनेक प्रयत्न करतेहैं किन्तु द्वार नहीं टूटता।)

(जयजयकार करतेहुए, सीढ़ियां लेकर चन्दावतोंका प्रवेश)

चन्दावत सरदार—शीघ्रतामें मार्ग भूलकर दल-दलमें फंस जानेके कारण अभीतक हमारे पैर जानुपर्यंत कीचड़में सनेहुएहैं। यदि वह अजपाल आकर हमें मार्ग प्रदर्शित न करता तो हम अभीतक दल-दलमें ही फंसेरहजाते, और हिरोलका अधिकार खोजाते। किन्तु अभीतक शक्तावत वीर कुछ भी नहीं करसकेहैं। शीघ्रता करो। अबभी हिरोलका अधिकार प्राप्तकरनेका अवसर है। मैं सीढ़ियोंपर ऊपर चढ़कर दुर्गके परकोटपर चढ़ताहूँ। तुम मेरे पीछे-पीछे चढ़ते-चलेआओ।

(सीढ़ियोंको दीवारके सहारे लगाकर ऊपर चढ़ताहै।)

बल्ल—शक्तावतो ! क्या देखरहेहो, चन्दावत वीर आगे बढ़गएहैं। सीढ़ियोंके द्वारा दुर्गपर चढ़नेलगेहैं। महावत ! शीघ्रतासे हमारे हस्तीको दुर्गद्वार तोड़नेकेलिए प्रेरितकरो। द्वार टूटतेही वीरो ! शीघ्रतापूर्वक अन्दर प्रवेश करो और दुर्गपर हिन्दु-ध्वज फहराकर हिरोल प्राप्तकरो।

(चन्दावत वीर सीढ़ियोंपर ऊपर चढ़तेहैं और "हिरोल" "हिरोल"का तुमुलनाद करतेहैं। शक्तावतोंका हस्ती बार-बार द्वारके निकट आताहै किन्तु कीलोंके चुभनेसे आहतहोकर पुनः लौटजाताहै।)

(प्रकोष्टपर दो यवन सैनिकोंका प्रवेश)

प्र० यवन सैनिक—रात्रि खुलतेही यह शोरगुल कैसे होने लगा ?

द्वि० यवन सैनिक—नीचे देखो। अनेकों सैनिक हमें सुप्त या असावधान समझकर दुर्गपर अधिकार करने चलेआएहैं। कितनी उद्धतापूर्वक सीढ़ियोंपर ऊपर चढ़तेचलेआरहेहैं। नीचे द्वारपर देखो, हाथी किवाड़ोंको तोड़नेकेलिए बार-बार कितने प्रयत्न कररहाहै।

प्र० यवन सैनिक—देखते क्याहो ? शीघ्र गोला छोड़ो। इस ऊपर चढ़ने वालेको मारगिराओ।

(द्वि० यवन सैनिक गोला छोड़ताहै, जिससे चन्दावत सरदार मरकर नीचे गिरपड़ता है।)

बांदाठाकुर—चन्दावत सरदारको वीरगति प्राप्तहोगई, किन्तु चन्दावत वीरों! घबरानेका कार्य नहीं। चन्दावत सरदार जीवित दुर्गपर न चढ़सके तो क्या हुआ ? मैं उनके मृत शरीरको पीठपर बांधकर दुर्गके प्रकोष्टपर पहुंचाऊंगा और उनके मृत हाथसेही हिन्दु-ध्वजको दुर्गपर फहराकर चन्दावतोंकेलिए सदाकी भांति हिरोलका गौरव प्राप्तकरूंगा। सदासे हिरोलका गौरव चन्दावतोंका रहाहै और रहेगा। *(चन्दावत सरदारके शवको दुपट्टेसे बांध पीठपर लटकाकर सीढ़ीपर चढ़ताहै।)* आओ आओ, चन्दावत वीरो! मेरे साथ आगे बढ़ो।

(चन्दावत वीर दुर्गके ऊपर चढ़कर "हिरोल" "हिरोल"का घोरनाद करतेहैं ।)

बल्ल—चन्दावत वीरोंका "हिरोल" "हिरोल"का तुमुलनाद मेरे वक्षस्थलको फाड़ेडालताहै । क्या बल्लके जीवित रहते चन्दावत हिरोल लेजाएंगे ? महावत ! प्रेरितकरो हाथीको दुर्गके कपाटोंको तोड़नेकेलिए । समझगया, द्वारपर लगी पैनी लोह-कीलोंको देख कर हाथी बार-बार भयभीत होरहाहै और इसीसे द्वारपर अपने शिरसे टक्कर नहीं मारता । मैं इन बीचकी दो कीलोंपर चढ़कर खड़ा होताहूँ । महावत ! शीघ्र ही हाथीको मेरी पीठपर धक्का देनेकेलिए प्रेरितकरो । *(कीलोंपर चढ़ताहै ।)* शीघ्रता करो । कायर महावत ! क्या देखते हो ? चुभाओ अंकुश । नहीं मानते ? मैं अभी खड्गसे तुम्हारा शिर उड़ाताहूँ । अरे मूर्ख ! जहां शक्तावत कुलके मानका प्रश्न हो वहां एक बल्ल क्या सैकड़ों बल्ल अपने प्राणोंका तृणके समान बलिदान करसकतेहैं । वीरोंका शरीर उनके यशमें होताहै, अस्थि-मांसके पंजरमें नहीं । शीघ्रता करो ।

[बादाठाकुर चन्दावत सरदारके शवको लेकर दुर्गके प्रकोष्टके अत्यन्त निकट पहुंचजाताहै । चन्दावत वीर "हिरोल" "हिरोल" का गगन-भेदी नाद करतेहैं । महावत हाथीको बल्लकी पीठपर हांकताहै । लोह-कीलें बल्लके वक्षस्थलपर चुभकर बाहर निकल आतीहैं । दुर्गद्वार टूटताहै । शक्तावत बल्लके शरीरको कुचलते हुए "हिरोल" "हिरोल" का भीषण नाद करतेहुए दुर्गमें प्रवेश करतेहैं ।]

दृश्य—२

स्थान—उंटला, दुर्ग-प्रकोष्ट

(काफीखां और रफीखां शतरंज खेलनेमें मग्नहैं ।)

काफीखां—चुपरहो ! अभी सुबह-सबेरे कौन-से दुश्मन आमरे ? तुम पहरेदारोंको दिन-रात दुश्मनकी ही सूझतीहै । जाओ अपने दुश्मनसे कहदो—'बाजी खतम होनेदो, फिर आना' ।

प्र० यवन सैनिक—हजूर ! सही बात है । दुश्मन सचमुच आगयाहै और किलेकी दीवारोंपर चढ़रहाहै ।

रफीखां—(*जोरसे हंसकर*) अरे मियां ! कहांका सुपना देख रहेहो ? आज अफीम, भंग, गांजा, सुलफा, चरस तो नहीं खा आएहो । भला उंटला दुर्गकी दीवारोंपर कौन चढ़सकताहै ?

काफीखां—दुश्मन कोई छिपकली है जो किलेकी दीवारोंपर चढ़जाए ? हां मियां ! चलाओ ।

प्र० यवन सैनिक—हजूर !

काफीखां—हजूरका बच्चा ! भाग जाओ । दुश्मन से कहदो 'अभी हमें फुरसत नहीं है' ।

रफीखां—तुम खुद जाकर क्यों नहीं लड़ते ? जाओ, भागो ।

(चन्दावत सरदारके शवको पीठपर बांधकर लातेहुए बांदा ठाकुरका प्रवेश । उसके पीछे अनेक चन्दावतोंका "हिरोल" "हिरोल" का नाद करतेहुए प्रवेश । बांदाठाकुर दुर्गपर लहराते हुए मुगल ध्वजको गिराकर चन्दावत सरदारके हाथोंसे हिन्दुध्वज लहराताहै । चन्दावत वीर "हिरोल" हिरोल" चिल्लातेहैं) ।

(शक्तावतोंका "हिरोल" "हिरोल" कहतेहुए प्रवेश)

बांदाठाकुर—हिरोल चन्दावतोंकी ही रही, अचल वीर ! चन्दावतोंनेही सर्वप्रथम दुर्गप्रकोष्टपर हिन्दु-ध्वज लहरायाहै । आपलोग देरमें यहां पहुँचेहैं ।

अचल—अच्छा दुर्गपर हिन्दु-ध्वज लहराकर "हिरोल" का सौभाग्य चन्दावत वीरोंकोही प्राप्तहुआहै तो शक्तावतोंको इन यवनोंका शिर उड़ानेका गौरव तो प्राप्त करनेदीजिए।

बांदाठाकुर—शक्तावत वीरोंको दुर्गद्वार तोड़ने और इन यवनोंका संहार करनेका गौरव प्राप्तहो।

अचल—तो यवन वीरो! शतरंजका खेल छोड़कर मृत्युकेलिए प्रस्तुत होजाओ।

काफीखां—आपलोग तनिक ठहरें। बाजी खतम होनेतक आप ताअम्मुल करें। मियां! शाहको शह दो।

अचल—(*कुछ काल प्रतीक्षा करके*) तुम्हारी बाजी तो कभी पूर्ण न होगी यवन वीर! हमहीको अपनी बाजी पूरीकरनेदो। (*दोनोंके शिर उड़ाताहै।*) वीर चन्दावतो। दुर्गमें जितनेयवन हों उन्हें ढूंढ़-ढूंढ़कर मारडालो।

(*सबका प्रस्थान*)

दृश्य—३

स्थान—ऊंटला दुर्ग, द्वारके बाहर।

बाकरौलका सामन्त—वह देखिए महाराणा! उंटला दुर्गपर हिन्दु-ध्वज फहरारहाहै। आज आपके चन्दावत और शक्तावत वीरोंने जो महान पराक्रम दिखायाहै वह हिन्दुस्थानके इतिहासमें सदा अमर रहेगा। जब वीर चन्दावत सरदार यवनोंके गोलेसे मरकर खाईमें गिरपड़ा तो बांदाठाकुरने उसके शवको पीठपर बांधकर सीढ़ीपर चढ़ना आरंभ किया और दुर्गके प्रकोष्टपर उसे पहुंचाकर उसके मृत हस्तसेही दुर्गपर हिन्दु-ध्वज लहराया।

अमरसिंह—धन्य वीर चन्दावत! धन्य वीर बांदाठाकुर।

बाकरौलका सामन्त—और इधर देखिए दुर्गद्वारपर चिपके

शक्तावत वीर बल्लको, जिसने दानवों और अवतारों—जैसा अद्भुत वीरत्व प्रदर्शित कियाहै। विश्वभरके वीरोंमें शक्तावत वीर बल्लके समान अद्भुत विक्रम दिखानेवाले कोई बिरले ही होंगे। जब द्वारपर लगीहुई तीक्ष्ण लौह कीलोंसे घबराकर हाथी किसी प्रकार दुर्गका द्वार न तोड़सका तो यह वीर बल्ल कीलोंपर चढ़कर खड़े होगए और महावतको हाथी हांकनेकी आज्ञादी। हाथीका धक्का लगते ही लौह-कीलें बल्लके वक्षस्थलको फाड़कर बाहर निकलगईं। किन्तु द्वार टूटगया। शक्तावत वीर बल्लके शरीरपर पैर रखतेहुए दुर्गमें प्रविष्ट होगए।

अमरसिंह—(निकट *आकर बल्लके शरीरपर हाथ फेरतेहुए*) धन्यवीर शक्तावत! तुमने आज अपने अद्भुत वीरत्वसे हिन्दुस्थान के इतिहासमें अपना नाम अमर कियाहै।

बल्ल—*दूना दातार चौगुना जुझार।*
खुरासानी मुलतानीका अग्गल॥

अमरसिंह—जब तक आकाशमें सूर्यचन्द्रहै, जब तक गंगा यमुनामें जलहै, तब तक वीर शक्तावत बल्ल! तुम्हारी गौरव गाथा भूमंडलमें अमर रहेगी। ऐसे ही वीरोंके बल पर आजभी हिन्दुजाति जीवित है, और एक बार अवश्य स्वातंत्र्य प्राप्त कर अपने देशमें सुखकी सांस लेसकेगी। बाकरौल सामंत! वीर बल्ल और वीर चन्दावत सरदारका साम्राज्यकी ओरसे वीरोचित विधिसे शव-संस्कारका प्रबन्ध करो। इन वीरोंकी चिता-भस्मको मस्तकपर मलकर कायरजन वीरत्व प्राप्तकरेंगे और नारियां वीरप्रसू बनेंगी।

(पटाक्षेप)